सम्पादकीय

सीटू मजदूर

सीआईटीयू का मुखपत्र

जनवरी 2021

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

के. हेमलता

कार्यकारी सम्पादक

जे.एस. मजुमदार

सदस्य

तपन सेन,
एम.एल. मलकोटिया,
कश्मीर सिंह ठाकुर,
पुष्पेन्द्र त्यागी,
एच.एस. राजपूत

अंदर के पृष्ठों पर

vke gM+rky ij fjiksVZ 5
fdlku vkUnksyu
fdlku&etnwj
,drk dh utj ls 8
Lfpo eMy dh fjiksVZ ls 18
fdlku vkanksyu ds
leFkZu esa VsªM ;wfu;u
dkjokfg;ka 19
jkT;ksa ls 20
varjkZ"Vªh; 23
miHkksDrk ewY; lwpdkad 26

आन्दोलन को फैलाओ; मोर्चे खोलो

viuh Lo;aLQwrZrk] n`<+rk vkSj tq>k:iu ds ifjek.k ls] fnYyh ds pkjksa vksj py jgk fdlku vkUnksyu bfrgkl jp jgk gSA vko';d gS ;g ,frgkfld vlQyrk esa lekIr u gksA

vf[ky Hkkjrh; fdlku la?k"kZ leUo; lfefr ¼,-vkbZ-,l-lh-lh-½ }kjk dsUæh; VsªM ;wfu;uksa o QsMjs'kuksa ds lg;ksx ls eap ds lkFk feydj 26&27 uoacj 2020 dk nks fnolh; fnYyh pyks dk;Øe fnYyh dh Lo;aLQwrZ vfuf'prdkyhu ?ksjko ds :i esa lkeus vk x;kA bl vkUnksyu dh Lo;aLQwrZ mcky esa ennxkj cuh 0;fDrxr ifjfLFkfr;ka dk vnktk ekuh ljdkj dks Hkh ugha FkkA

Ñf"k {ks= esa v/kksl Ñf"k lac/kh dh lkFk LrjfoU;kl o xgjs iSB tkfr vk/kkfjr lkekftd lac/kksa ds cnyko ij thokn dks mlds Åij Fkksius dh dkf'k'k ds f[kykQ ;g fdlkuksa ds lHkh rcdksa dh çfrfØ;k gSA

fdlkuksa ds vkUnksyu ds lkFk ,dtqVrk dkjokfg;ka ls vkxs c<+us dk oDr vk x;k gSA ifjfLFkfr dh ekax gS fd vkUnksyu dk foLrkj djds vkSj fVdkÅ cuk;s j[kus ds fy, blds lHkh jkT;ksa esa QSykdj vkSj rst fd;k tk;sA vf[ky Hkkjrh; fdlku lHkk ¼,-vkbZ-ds-,l-½ us mfpr gh lHkh jkT;ksa dh jktèkkfu;ksa esa 23&25 tuojh] 2021 ds nkSjku dsaæ ljdkj ds çfrfuf/k xouZj Hkouksa ds lkeus 3 fnu ds fdlkuksa ds egkiM+koksa dk vkºoku fd;k gSA bu egkiM+koksa esa etnwj oxZ rFkk efgykvksa] ;qokvksa o Nk=ksa ds vU; tulaxBuksa dh Hkh 'kkfey gksaxsA

;g vko';d gS fd fofHkUu oxksZa o tu laxBuksa ds }kjk viuh ekaxksa ds lkFk vkSj fdlkuksa dh ekaxksa ds leFkZu esa la?k"kZ ds vyx ekspsZ [kksys tk;saA lhVw us 10 lw=h; ekaxksa dk ydj igys gh nsljk ekpkZ [kksy fn;k gSA

,d eqís ;k ,d ckj ds eqís ls vkxs tkus dk ,frgkfld {k.k vk x;k gSA bls d,jikjsVksa vkSj mudh ljdkjksa ds uo&lkekU; dh dkf'k'kksa ds f[kykQ] mÙkj dkfon geyksa dk Árfrfojks/k djus ds fy, iwth dks pqukSrh nsus okys lcdks leVus okys vkUnksyu ds :i esa fodflr djuk gksxkA Hkkjr vkSj nqfu;k Hkj esa ,slk gks jgk gSA

शोक संवेदना

कॉमरेड रघुनाथ सिंह

सीटू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और पंजाब राज्य कमेटी के महासचिव रघुनाथ सिंह की अचानक बीमारी और कोविड–19 जटिलताओं के बाद 20 दिसंबर 2020 को 66 वर्ष की आयु में असामयिक निधन पर सीटू स्तब्ध और दुखी है। वह अपने अंत समय तक माकपा के पंजाब राज्य सचिवमण्डल के सदस्य थे।

कॉमरेड रघुनाथ सिंह पंजाब के होशियारपुर जिले में एक राजनीतिक परिवार में जन्मे उनके पिता एक प्रसिद्ध कम्युनिस्ट नेता और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होने पार्टी के भूमिगत नेताओं जैसे हरकिशन सिंह सुरजीत, पंडित किशोरी लाल और अन्य को आश्रय देते रहे थे। कॉमरेड रघुनाथ सिंह जन आंदोलन में युवावस्था से ही सक्रिय थे। एसएफआई के जिला नेता के रूप में उन्होंने आन्दोलन आयोजित किया और 3 महीने के लिए जेल गए। अपने छात्र दिनों के तुरंत बाद, कॉमरेड रघुनाथ एक होलटाइमर के रूप में सीटू में शामिल हो गए और 1982 में इसके जिला अध्यक्ष बने और जिले में फैक्ट्री मजदूरों के कई संघर्षों का नेतृत्व किया। उन्हें 2003 में सीटू राज्य महासचिव के रूप में चुना गया था और सीटू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में भी चुना गया था। उन्होंने 26 नवंबर 2020 की आम हड़ताल और चल रहे किसान आंदोलन के समर्थन सहित सभी राष्ट्रीय और राज्य आंदोलनों की सफलता के लिए राज्य भर में अथक प्रयास किया।

सीटू ने दिवंगत नेता को सादर श्रद्धांजलि दी; कॉमरेड रघुनाथ सिंह की याद में अपना लाल झंडा झुकाया और उनके साथियों और परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

इतिहास के पन्नों से

100 साल पहले; 1921 में

- पहला ट्रेड यूनियन केंद्र– ★पहली बार भारत के 'स्वराज' की माँग उठायी; ★समाजवादी रूस के मजदूरों के साथ अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता जाहिर की।

भारत में नव गठित पहले ट्रेड यूनियन केन्द्र का अगला सम्मेलन 30 नवंबर, 1921 को झरिया के कोयला क्षेत्र में आयोजित किया गया था, जिसमें अन्य के साथ लाला लाजपत राय षामिल हुए थे। इस ऐतिहासिक सम्मेलन में 50,000 से अधिक मजदूरों ने भाग लिया और सभी कोयला खदानें लगातार 3 दिनों तक बंद रही। इस सम्मेलन में पहला प्रस्ताव औपनिवेशिक शासन के खिलाफ, पहली बार, 'स्वराज' पर और दूसरा प्रस्ताव साम्राज्यवादी देषों से घिरे मजदूर वर्ग के प्रथम राज्य रूस के भूख से मरते लाखों लोगों के साथ एकजुटता व्यक्त की और भारतीय मजदूरों से रूस के मजदूर वर्ग के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उनकी सहायता करने के लिए एक दिन का वेतन दान करने की अपील की।

–प्रथम ट्रेड यूनियन द्वारा हड़ताल–

मद्रास लेबर यूनियन, भारत में पहला संगठित ट्रेड यूनियन जून से अक्टूबर 1921 तक 5 महीने की, अनिष्चित कालीन हड़ताल पर था।

– हड़तालों की लहर–

ब्रिटिश सरकार के रिकॉर्ड के अनुसार, 1921 में 396 हड़तालों की लहर में 6,00,000 मजदूर शामिल हुए थे।

26 नवंबर की आम हड़ताल पर अन्य रिपोर्टें

(सीटू मजदूर के दिसंबर 2020 संस्करण में क्षेत्रीय व राज्यीय रिपोर्टें प्रकाशित हो चुकी। ये कुछ और भी रिपोर्टें)

हिमाचल प्रदेश

राज्य में, सीटू यूनियनों में 62,416 मजदूर 26 नवंबर को मजदूरों की देशव्यापी आम हड़ताल पर थे। उनमें से 10,000 से अधिक सोलन, सिरमौर, कुल्लू, मंडी, शिमला, कांगड़ा, किन्नौर, चम्बा, ऊना, बिलासपुर और हमीरपुर के 11 जिलों में 294 स्थानों पर ; और राज्य सड़क परिवहन कर्मचारियों, निजी बस चालक कंडक्टर और चिकित्सा प्रतिनिधियों की राज्य स्तरीय यूनियनें भी प्रदर्शन में शामिल हुए।

कर्नाटक

ट्रेड यूनियनों की संयुक्त कमेटी (जेसीटीयू) द्वारा संगठित, लगभग 65 लाख मजदूरों ने आम हड़ताल में भाग लिया और उनमें से एक लाख से अधिक ने 26 नवंबर को राज्य भर में प्रदर्शनकारी कार्यक्रमों में भाग लिया।

सार्वजनिक क्षेत्र के मजदूरों की भागीदारी जनवरी 2020 की हड़ताल की तुलना में इस हड़ताल में बहुत व्यापक और गहरी थी। पीएसयू यूनियनों के जेएएफ ने निजीकरण के खिलाफ और अन्य माँगों पर एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया। बीईएमएल, एचएएल, भेल और बीईएल में सभी मान्यता प्राप्त यूनियनों ने हड़ताल का नोटिस जारी किया; और, प्रबंधन द्वारा धमकियों के बावजूद, बीईएल को छोड़कर सभी इकाइयों में मुकम्मल हड़ताल थी, हालांकि पिछली हड़तालों की तुलना में बेहतर थी। सार्वजनिक उपक्रमों के ठेका मजदूरों ने भी काम रोक दिया और कारखाने के गेटों पर विरोध ा प्रदर्शनों में शामिल हुए।

निजी क्षेत्र के सभी बड़े कारखानों में हड़ताल सफल रही। कई जिलों में ऑटो रिक्शा चालकों की हड़ताल हुई। बैंगलोर में, ऑटो रिक्शा हड़ताल आंशिक थी।

अकेले सीटू ने 9 लाख से अधिक हैंडबिल, 60,000 पोस्टर और निजीकरण–विरोधी बुकलेट की 9,000 प्रतियां प्रकाशित कीं।

राजस्थान

सीटू के नेतृत्व में लगभग 2.85 लाख मजदूरों ने उद्योगों और असंगठित क्षेत्र और अन्य में 26 नवंबर की आम हड़ताल में भाग लिया; और उनमें से 24,000 से अधिक ने राजस्थान के 11 जिलों में 46 स्थानों पर प्रदर्शनों में भाग लिया। क्षेत्रीय तौर पर रावत भाटा परमाणु ऊर्जा संयंत्र में 15,000 से अधिक ठेका मजदूरों और स्थायी मजदूरों के बीच अग्रणी सीटू यूनियन के नेतृत्वकारी कार्यकर्ता शामिल हुए; सीकर में कपड़ा उद्योग के 900 मजदूर; 4,940 एफसीआई गोदामों, राज्य गोदामों, श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में कृषि मंडियों के लोडिंग और अनलोडिंग मजदूर; श्रीगंगानगर में लगभग 500 ईंट भट्ठा मजदूर; जयपुर में 1100 इंजीनियरिंग कर्मचारी; राज्य भर में सभी चिकित्सा प्रतिनिधि; आयकर, जीएसआई, केंद्र सरकार के सर्वेक्षण कर्मचारी; बैंक और बीमा में सभी; एग्रो–टेक के 80 कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया।

उत्तर प्रदेश

सीटू राज्य केंद्र में 18 जिलों से आम हड़ताल की रिपोर्ट है। हड़ताल के प्रसार और तीव्रता में क्षेत्रवार असमानता थी। वित्तीय क्षेत्र में हड़ताल, स्टेट बैंक को छोड़कर, बैंक और बीमा में व्यापक थी। प्रत्येक धरने और प्रदर्शन में 100 से 600 कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। शाम तक 93 ट्रेड यूनियन नेताओं और कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। हड़ताल में 25 जिलों के 78 ब्लॉकों की 2,330 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शामिल हुई। पूरे राज्य में चिकित्सा प्रतिनिधियों की हड़ताल थी। केंद्र सरकार के कर्मचारियों की हड़ताल 20 से 60 प्रतिशत थी।

हरियाणा

राज्य के व्यापक क्षेत्रों में 26 नवंबर मजदूरों की आम हड़ताल प्रभावी थी। निर्माण, योजना और अन्य के हड़ताली मजदूर बड़ी संख्या में सड़कों पर निकल आए। सार्वजनिक क्षेत्र में, बिजली, तीन स्तरीय नगर निकायों, विश्वविद्यालयों और

शिक्षा बोर्ड, पर्यटन, पीडब्ल्यूडी, आईटीआई आदि में कर्मचारियों और मजदूरों की हड़ताल व्यापक रूप से सफल रही थी, हालांकि, सीटू से जुड़े कार्यकर्ताओं और मजदूरों को छोड़कर निजी संगठित क्षेत्र में कोई हड़ताल नहीं थी।

मजदूरों की हड़ताल से पहले की तैयारियों की गतिविधियों में अधिकांश जिलों में शारीरिक सम्मेलन आयोजित करना शामिल है, प्रत्येक में सैकड़ों मजदूर शामिल हुए। सीटू यूनियनों ने बड़ी संख्या में पोस्टर लगाए और हैंडबिल बांटे। हड़ताल की तैयारी के साथ, राज्य में सीटू किसान संगठनों के साथ उनके 26–27 नवंबर को *दिल्ली चलो* कार्यक्रम के लिए संयुक्त तैयारी भी की। 26 नवंबर की हड़ताल के बाद से, राज्य में सीटू भी लगातार किसानों के प्रथम मोर्चे पर मोदी सरकार के खिलाफ लड़ाई में दिल्ली की सीमाओं पर लामबंद होने और गांवों में फैलाने में एकजुटता के साथ काम कर रहा है। मजदूरों और किसानों के आंदोलनों की दोनों धाराओं को दबाने के लिए, भाजपा राज्य सरकार ने 23 नवंबर की रात से ही, ट्रेड यूनियनों और किसान संगठनों दोनों के 50 से अधिक नेताओं को गिरफ्तार किया। मजदूरों की हड़ताल और किसान के *दिल्ली चलो* कार्यक्रम की सफलता के लिए कई नेताओं को भूमिगत होकर काम करना पड़ा।

25 नवंबर को, हरियाणा राज्य के किसानों ने अंबाला से दिल्ली तक मार्च शुरू किया। पुलिस ने मार्च के लिए कई बाध ाएं खड़ी कीं। दूसरी तरफ, हरियाणा पुलिस ने पंजाब–हरियाणा सीमा पर पंजाब के किसानों को रोक दिया। सीटू ने, अन्यों के साथ, पंजाब के किसानों की मदद करने के लिए और पंजाब के किसानों के जत्थे के लिए हरियाणा–पंजाब सीमा को फिर से खोलने के लिए कड़ी मेहनत की।

26 नवंबर को, मजदूरों की हड़ताल के दिन, हरियाणा पुलिस ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर कुंडली के पास प्रदर्शन कर रहे सैकड़ों मजदूरों को गिरफ्तार किया। इसी तरह, पुलिस ने सांपला और बिलासपुर से दिल्ली तक मार्च कर रहे किसानों को गिरफ्तार किया, जिसमें अधिकांश सीटू के सदस्य और योजना कर्मी थे।

राज्य सरकार के कर्मचारी

केरल, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, महाराश्ट्र, बिहार, असम, हरियाणा, पंजाब और तमिलनाडु के 20 जिलों में राज्य सरकार के कर्मचारियों द्वारा हड़ताल को अच्छी प्रतिक्रिया मिली।

उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और ओडिशा में हड़ताल आंशिक थी।

आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और मध्य प्रदेश में राज्य सरकार के कर्मचारियों ने केवल एकजुटता प्रदर्शनों में भाग लिया।

केंद्रीय ट्रेड यूनियनों के संयुक्त मंच ने

सरकार के साथ शारीरिक बैठक पर जोर दिया

चार श्रम संहिता के मसौदा नियमों पर केंद्रीय श्रम मंत्री के 24 दिसंबर को एक ऑनलाइन परामर्श बैठक के निमंत्रण के जवाब में, केंद्रीय ट्रेड यूनियन संगठनों के संयुक्त मंच ने मंत्री के प्रस्ताव को खत लिखकर इंकार कर दिया और लाभदायक चर्चा के लिए भौतिक बैठक पर जोर दिया। ट्रेड यूनियनों ने बताया कि इस तरह का अभ्यास, एक ही दिन के वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से, सभी चार श्रम कोड के मसौदा नियमों पर, जिसमें अधिक हितधारक शामिल है, केवल रिकॉर्ड के लिए है और बिना किसी लाभदायक बात के पूरा होगा। उनकी राय है कि यह अभ्यास केवल इस आलोचना को पूरा करने के लिए किया जा रहा है कि केंद्र की यह सरकार त्रिपक्षीय परामर्श का उल्लंघन कर रही है। एक ओर वे संसद के शीतकालीन सत्र को रद्द कर देते हैं, वहीं दूसरी ओर कोविड महामारी के दौरान बरती जाने वाली सभी सावधानियों को वे चुनाव प्रचार के लिए राजनीतिक रैलियों आदि के लिए फेंक रहे हैं। इसलिए अधोहस्ताक्षरकर्ता केंद्रीय ट्रेड यूनियनें इस तरह के एक स्वांग का हिस्सा नहीं होंगी।

बेरोजगारी पर

सीटू–डीवाईएफआई और एसएफआई का संयुक्त अभियान

सीटू की पहल पर और बेरोजगारी, नौकरी और रोजगार की गुणवत्ता के मुद्दों पर आपसी परामर्श के दौर के माध्यम से; सीटू–डीवाईएफआई–एसएफआई ने देशव्यापी संयुक्त अभियान और जमीनी स्तर पर लामबंदी का फैसला किया।

कार्यक्रमों के बारे में

1. सीटू–डीवाईएफआई और एसएफआई के राज्य नेतृत्व की बैठक; सीटू को पहल करनी होगी।
2. दिल्ली में 2 फरवरी 2021 को संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन
3. इसके बाद ही राज्य और जिला स्तर पर संयुक्त सम्मेलन
4. सभी राज्यों में माँगो के चार्टर पर व्यापक संयुक्त और स्वतंत्र अभियान जमीनी स्तर तक युवाओं, छात्रों, मजदूरों, बेरोजगारों और आम तौर पर लोगों के व्यापक वर्गों तक पहुंचने के उद्देश्य से हो सकते हैं
   (ए) बेरोजगारी की सीमा तथा जमीनी स्तर पर इसके प्रभाव को समझने के लिए सर्वेक्षण;
   (बी) अभियान सामग्री का व्यापक वितरण;
   (सी) संयुक्त रूप से संबंधित स्तर पर तय किए गए जत्थे/जुलूस/बैठकें/धरना आदि;
5. सभी राज्यों में एक ही दिनांक या एक सप्ताह की अवधि के भीतर राज्य स्तरीय प्रदर्शन;
6. अखिल भारतीय संयुक्त लामबंदी, यदि संभव हो तो संयुक्त रूप से निर्णय लिया जा सकता है।

अगले दौर में संयुक्त देशव्यापी संघर्ष के लिए जमीन तैयार करने के लिए बेरोजगारी पर सीटू–डीवाईएफआई–एसएफआई की संयुक्त पहल का यह पहला चरण है।

माँगे

1. ऐसी नीतियां तैयार करें जो अच्छे स्थायी रोजगार पैदा करें;
2. ठेका, आकस्मिक रोजगार और सरकारी योजनाओं में स्वैच्छिक कार्य के छलावरण के तहत, बाल–श्रम स्कूलों और अन्य सेवाओं सहित शिक्षा के तहत सभी कर्मचारियों को नियमित करना;
3. एससी/एसटी आदि के लिए संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार आरक्षण में सभी बैकलॉग सहित विभिन्न सरकारी विभागों और सार्वजनिक उपक्रमों में सभी रिक्तियों को भरें;
4. रोजगार में आरक्षण के लिए सभी वैधानिक प्रावधानों को सख्ती से लागू करें; निजी क्षेत्र में सभी प्रकार के रोजगार के लिए इन आरक्षणों को बढ़ाएँ और लागू करें;
5. उचित वैधानिक लागू करने योग्य उपायों के माध्यम से प्रति सप्ताह 35 घंटे और चार–शिफ्ट का कार्यदिवस पर जोर दें;
6. बाल श्रम के प्रसार के मुद्दे को गंभीरता से संबोधित करें; नियमित स्कूलों में उनके नामाँकन को तैयार करने के लिए विशेष बाल श्रम स्कूलों को मजबूत करना; प्रभावित परिवारों को सरकार की सहायता से पुनर्वासित करना;
7. ढांचागत विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर सार्वजनिक व्यय/निवेश बढ़ाएं और अच्छे स्थायी रोजगार पैदा करें;
8. सरकार/पीएसयू कर्मचारियों की समयपूर्व अनिवार्य सेवानिवृत्ति को वापस ले;
9. सरकारी प्रोत्साहन/रियायतें/छूट को सीधे से निजी कॉर्पोरेट निवेश के लिए, ठोस रूप में, ठोस और स्थायी नौकरी के निर्माण के लिए प्रदान की जाए
10. रोजगार के संबंधों की नाजुकता सहित अनिश्चित रोजगार, असुरक्षित रोजगार की सुविधा प्रदान करने वाले सभी उपायों/नीतियों को वापस ले/निरस्त करे;
11. मनरेगा को एक घर प्रति व्यक्ति के बजाय प्रत्येक नौकरी ढूंढने वाले व्यक्ति के लिए लागू करें; मनरेगा के तहत 200 दिन प्रति वर्ष न्यूनतम मजदूरी 200 रुपये प्रति दिन के साथ कार्यदिवस बढ़ाएं; उपयुक्त वैधानिक उपायों के साथ शहरी रोजगार गारंटी योजना तैयार करना;
12. वैधानिक उपायों के माध्यम से प्रति माह 5000 रुपये की बेरोजगारी भत्ता लागू करें;
13. सार्वजनिक निवेश के माध्यम से प्रवेश स्तर से शिक्षा के बुनियादी ढांचे का विस्तार करने के साथ–साथ विश्वविद्यालय स्तर तक सभी के लिए उपयुक्त वैधानिक उपायों के साथ मुफ्त अनिवार्य शिक्षा; इसमें व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास संस्थान षामिल होने चाहिए;
14. संविधान में उपयुक्त संशोधन के माध्यम से काम का अधिकार एक मौलिक अधिकार बनाया जाए।

किसान आन्दोलन : किसान–मजदूर एकता की नजर

हम सभी देख रहे हैं कि 40 दिनों से अधिक समय से लाखों किसान दिल्ली के चारों ओर सड़कों पर डटे हैं। दिसंबर की इस कड़कड़ाती ठंड जिसमें घर के अंदर भी सर्दी से बचाव मुश्किल हो, तो बुजुर्ग–बच्चे–महिलाऐं सभी खुले आसमान के नीचे पल्लियों/टेंटों में अपनी रातें काट रहे हैं। लाखों किसान जान की बाजी लगाकर बैठे हैं कि या तो कानून वापस होने घर जाएगें या यहीं जान दे देंगे। कहा जा रहा है कि ऐसा आन्दोलन आजादी के बाद पहली बार देखने को मिल रहा है। बहुत मायने में यह आन्दोलन ऐतिहासिक है और इसके केन्द्र मे वर्गीय संघर्श के मुद्दे हैं। इसने एक हद तक ही सही, असल में सत्तासीन शासक वर्ग के रूप में कारपोरेटस् (पूँजीपति जमात) को जनता के बीच में ला दिया है। भारतीय जनता पार्टी किस प्रकार से नंगे रूप में चन्द कारपोरेटस के हित में खड़ी है यह भी जगजाहिर हो चुका है।

हरियाणा में आन्दोलन की तैयारियां

जिन कानूनों को भाजपा कोरोना संकट के समय जून महीने में अध्यादेश के रूप में सामने लाई थी, इन कानूनों का विरोध उसी समय शुरू हो गया था। लेकिन उस समय देश भर में कोरोना के चलते, बड़े पैमाने पर लोग सड़कों पर उतर नहीं पा रहे थे। इसके बावजूद पंजाब एंव हरियाणा में जुलाई महीने में राष्ट्रीय स्तर पर बनी किसान संघर्ष समन्वय समिति के आह्वान पर आन्दोलन की तैयारियां शुरू हो गई थी। हरियाणा में 26 जून को सीटू, किसान सभा व खेत मजदूर यूनियन के राज्य नेतृत्व की बैठक जिसमें 25 जुलाई के ब्लाक स्तरीय कार्यक्रमों व 9 अगस्त के किसान–मजदूरों के जेल भरो में सड़कों पर भागेदारी के लिए योजना बनाई। और तीनों जनसंगठनों की समझ बनी कि मेहनतकश जनता पर जारी हमलों बारे अपने कार्यकर्ताओं को जागरूक करने के लिए ब्लाक/कलस्टर स्तर की संयुक्त कन्वेंशनें/बैठकें की जाएं। राज्य में तमाम बैठकें भौतिक उपस्थित के साथ हुईं। इस योजना के अनुसार ब्लाक/कलस्टर स्तर पर कुल 78 कार्यक्रम हुए जिनमें करीबन 2516 साथियों की हिस्सेदारी रही। तीनों संगठनों के स्वतंत्र अभियान अलग से चले। राज्य नेतृत्व का शारिरिक रूप से कार्यकर्ताओं के बीच जाना बहुत लाभदायक रहा। किसान एवं खेत मजदूरों के साथ संयुक्त कन्वेंशन व अभियान सकारात्मक रहा। इन प्रयासों के परिणामस्वरुप 9 अगस्त को करीब 35,000 मजदूर–किसानों ने सड़कों पर जुलूसों में हिस्सेदारी की थी। भारी बारिश, कोरोना संक्रमण के डर व सार्वजनिक परिवहन के लगभग बंद होने के बावजूद यह उपस्थिति उत्साह देने वाली थी।

26–27 नवंबर को दिल्ली चलो और 26 नवंबर की हड़ताल

पंजाब के किसान इन देशव्यापी अभियानों के आह्वान के पहले से ही आन्दोलनरत थे। हरियाणा में 20 सिंतबर को कुरूक्षेत्र के पीपली में किसानों पर लाठीचार्ज हुआ। उसके बाद 25 सितंबर को देशव्यापी रोड जाम का आह्वान किसान संगठनों की ओर से किया गया। इस दिन राज्य व स्थानीय राजमार्ग लगभग बंद रहे। जहाँ एक तरफ किसानों में इन कानूनों के खिलाफ भारी रोष था। वहीं सीटू के हजारों कार्यकर्ताओं ने रोड़ जाम की इन कार्यवाहियों में भाग लिया था। कई स्थानों पर किसानों से ज्यादा सीटू के नेतृत्व में मजूदर इन आयोजनों में शामिल रहे। 26–27 के किसानों के दिल्ली चलो व 26 नवंबर की केन्द्रीय मजदूर संगठनों की देशव्यापी हड़ताल की तैयारियों में एक सामंजस्य व योजना के बारे राज्य स्तर पर संयुक्त बैठक हुई। उसके बाद जिलों के स्तर पर बैठकें हुई। दिल्ली में किसानों को न घुसने देने के सरकार के रूख को पहले ही भांप लिया गया था। इसलिए राज्य में दिल्ली के चार ओर से राष्ट्रीय राजमार्गों को लक्षित करते हुए दिल्ली के बार्डर पर चार केन्द्र तय हुए। और संगठन के तमाम कार्यकर्ता स्थानीय स्तर तक जानते थे कि उन्हें 26–27 को क्या करना है?

हरियाणा की भाजपा सरकार का रूखः हरियाणा की धरती पर टकराव

इस अभियान की तैयारियों के साथ–साथ राज्य सरकार की इंटेलिजैंस भी निरंतर सक्रिय थी। इसलिए राज्य भर में 23 नवबर की रात को ही 50 से ज्यादा किसान–मजदूर नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। मुख्यतः निशाना इस बात पर था कि किसानों को इकट्ठा न होने दिया जाए व उन्हें लमाबंद करने वाले मुख्य नेतृत्व को काबू कर लिया गया। इसके चलते सैंकड़ों नेताओं को भूमिगत होना पड़ा। हरियाणा में 25 अगस्त को ही किसानों के एक संगठन ने अंबाला से राष्ट्रीय राजमार्ग पर दिल्ली की ओर कूच कर दिया। इसके साथ भाजपा सरकार ने क्या–क्या बर्ताव किया जग जाहिर है। इसी प्रकार हरियाणा पंजाब के बार्डर्स पर जिनमें सिंघु बार्डर, खन्नोरी, चीका के पास, डबवाली, टोहाना आदि कई जगहों पर बड़े–बड़े नाके लगाए गए थे। अपने ही देश के नागरिकों को दिल्ली पहुँचने से रोकने के लिए भाजपा निजाम ने क्या–क्या न किया। किसानों पर लाठीचार्ज किया। पानी की बौछारें की, आंसु गैस के गोले छोड़े और फिर भी न रूके तो हाइवे पर बड़ी–बड़ी खाईयां खोद दी, कंटीली तारें और बड़े–बड़े पत्थर लगा दिए। हरियाणा में सीटू ने कईं सारे बॉर्डर पर इन तमाम बाधाओं को पार करवाने में पंजाब व हरियाणा के किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। इस दौरान कैथल में चीका के साथियों पर पुलिस केस भी दर्ज हुए। आखिरकार सारी बाधाओं को पार करके लाखों किसान दिल्ली की सीमाओं पर पहुँच गए। हरियाणा में इन जत्थों के प्रवेश के साथ ही सीटू के नेतृत्वकारी साथी इन जत्थों के साथ रास्ते की बाधाओं को पार करवाने में साथ रहे।

मजदूर संगठन के रूप में हमारी भूमिका

राज्य में 26 नवंबर की हड़ताल के दिन कईं स्थानों पर गिरफ्तारियां हुई। विशेषकर तीन राष्ट्रीय राजमार्गों पर पूर्व निर्धारित कुंडली, सांपला, बिलासपुर में सैंकड़ों कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया। जिनमें अधिकांश सीटू के रहे जिनमें महिलाओं (स्कीम वर्कर्स) की संख्या उल्लेखनीय थी। उसके बाद से निरंतर कार्यवाहियाँ हुई हैं। इन सभी में सीटू की बेहतर हिस्सेदारी रही है। 26 नवबंर के बाद से ही सीटू के सैंकड़ों कार्यकर्ता किसान कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहे हैं। जहाँ दिल्ली के साथ लगे हरियाणा के पांच स्थानों पर लगे मोर्चों पर साथी डटे है वहीं इस आन्दोलन के मुद्दों को आम जनता में ले जाने के गंभीर प्रयास किए जा रहे है। 28 नवंबर को सीटू ने स्वतंत्र रूप से आन्दोलन के समर्थन में प्रदर्शन किए। उसके बाद किसान आन्दोलन की और से जो भी आह्वान किए जिसमें 3 दिसबंर, 5 दिसंबर, 8 दिसंबर रोड़ जाम, 12 दिसंबर टोल फ्री, 13 दिसंबर को जयपुर–दिल्ली हाईवे रोकना, 14 दिसंबर को जिला स्तरीय प्रदर्शन, 25 दिसंबर के बाद राज्य के सभी टोल टैक्स केन्द्र फ्री करवाना, 27 दिसंबर को मन की बात के दौरान थाली बजाओ जैसे कार्यक्रम बेहद सफल रहे जिसमें सीटू की कतारों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। सीटू राज्य व जिला नेतृत्व का बड़ा हिस्सा किसानों के बीच जा रहा है व बॉर्डर पर किसानों को भेजने की तैयारियो में लगा है और अलग–अलग जिलों से सैंकड़ों ट्रैक्टर बार्डर पर पहुँच रहे हैं।

इस बीच जनवादी महिला समिति के साथ सीटू की कामकाजी महिला सब कमेटी की बैठक हुई है। आन्दोलन में महिला किसानों व मजदूरों की भागीदारी बढ़ाने के लिए विशेश अभियान चलाया जा रहा है। इसके लिए गावों व शहरों की बस्तियों में किसान व मजदूर महिलाओं की बैठकें की जा रही हैं। जिसमें दोनों संगठनों का नेतृत्व शामिल हो रहा है। जिस प्रकार से सीटू के पूर्णकालिक कार्यकर्ता हो या आम कार्यकर्ता बड़ी संख्या में इस आन्दोलन में दिन रात लगे हैं। अपने गांव–इलाके में किसानों के बीच अभियान में नेतृत्वकारी भूमिका अदा कर रहे हैं। इससे आमजन में स्वीकार्यता बढ़ रही है।

सर्व कर्मचारी संघ के नेतृत्व में हजारों कर्मचारियों ने हड़ताल करते हुए आन्दोलनरत किसानों के समर्थन में कईं कार्यवाहियां की है। यही नहीं सिंघु, टीकरी बॉर्डर पर स्वास्थ कैपं को नियोजित करने में जेएसए के साथ बड़ी भूमिका रही है। इसी प्रकार आंदोलन की बड़े पैमाने पर आर्थिक मदद भी इस की गई है। पंजाब से आने वाले किसानों के लिए जीन्द जिला में सीटू, किसान सभा के साथ मिलकर लंगर चलाया जा रहा है जिसमें प्रतिदिन आन्दोलन में आने–जाने वाले औसतन 2,000 लोग भोजन आदि कर रहे हैं। इसमें भी संगठन की अहम भूमिका है।

आन्दोलन में विभाजन के प्रयासः लेकिन मिलेगी मात

भाजपा बड़े साजिशाना ढ़ंग से इस आन्दोलन को कमजोर व बदनाम करने के लिए कुत्सित प्रयास कर रही है। पहला प्रयास के तहत हरियाणा–पंजाब के बीच सतलुज यमुना लिंक नहर के मुद्दे को उछाला। इस मुद्दे पर राज्य में 19 दिसंबर को भाजपा ने जिला मुख्यालयों पर उपवास के कार्यक्रम रखे थे जिनमें इसके दर्जनों भर कार्यकर्ता भी नहीं पहुँचे। जबकि इसके विरोध में हजारों–किसान मजदूर पहुँच गए। कई स्थानों पर भाजपा नेताओं को पुलिस ने बचाया। राज्य में 2016 में जाट आरक्षण आन्दोलन में हुई हिसां जिसे जातिय रूप देकर भाजपा ने अपनी स्थिति मजबूत की है। आन्दोलन को कमजोर करने के लिए इसे अब प्रयोग किया जा रहा है। भ्रम फैलाने के पूरे प्रयास हो रहे हैं कि उक्त आन्दोलन जाति विशेष व किसानों का है जबकि मजदूरों का इससे कुछ लेना–देना नही है। इस बारे सचेत रहते हुए नेतृत्वकारी साथी भाजपा की इस साजिश को नाकाम करने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। मजदूरों के बीच अभियान चलाया जा रहा है। खेती व खाद्य सुरक्षा को उजाड़ने वाले इन कानूनों को मजूदरों पर क्या असर होंगे व लेबर कोड्स कैसे मजदूरों को गुलाम बनाएगें, इस बारे भी बताया जा रहा है। किसान– मजदूर एकता का माहौल बन रहा है और दूरियां कम हो रही हैं। ऐसी जानकारियाँ जमीनी स्तर से मिल रही हैं कि भाजपा जिस प्रकार से इन आन्दोलन को बदनाम व कमजोर करने की कोशिश कर रही है, वह अपने मकसद में कामयाब नहीं होगी। इस दौरान मजदूरों–किसानो में अभियान का अभी तक का अनुभव यही कहता है। *(द्वाराः जय भगवान महासचिव सीटू हरियाणा)*

किसान-मजदूर एकता

मोदीनीत भाजपा सरकार के खिलाफ

सीटू ने खोला दूसरा मोर्चा

सीटू ने आने वाले संघर्षों के मद्देनज़र मोदीनीत भाजपा सरकार के खिलाफ दूसरा मोर्चा खोल दिया है;

- **30 दिसंबर 2020 को कार्यस्थल/ब्लॉक–स्तरीय प्रदर्शन**
- **7–8 जनवरी 2021 का गिरफ्तारियां देने सहित जिलास्तरीय जुझारु प्रदर्शन**
- **सभी राज्यों के अंदर से 15 जनवरी से क्षेत्रीय जत्थे; राज्य स्तर पर बड़े पैमाने पर लामबंदी के साथ समापन**

(इसके बाद स्वतंत्र के साथ ही साथ संयुक्त ट्रेड यूनियन कार्रवाहियों को घनीभूत किया जाएगा जैसा भी संयुक्त ट्रेड यूनियन मंच द्वारा तय किया जाएगा)

माँगें

1. सभी चार श्रम संहिताओं को निरस्त करो
2. तीन कृषि अधिनियमों को निरस्त करो
3. बिजली बिल 2020 को वापस लो
4. निजीकरण बंद करे
5. सभी गैरआयकर परिवारों के लिए 7500 रुपये प्रतिमाह का नकद हस्तांतरण
6. सभी जरूरतमंदों को 10 किलो खाद्यान्न प्रति व्यक्ति प्रति माह
7. मनरेगा के तहत कम से कम 700 रुपये दैनिक मजदूरी के साथ 200 दिन का काम; कानूनी रूप से लागू रोजगार गारंटी योजना का शहरी क्षेत्रों में विस्तार करो
8. एनपीएस निरस्त करो; पुरानी पेंशन प्रणाली लागू करो
9. सभी के लिए सामाजिक सुरक्षा
10. सार्वभौमिक निशुल्क स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करो

किसान-मजदूर एकता

मोदीनीत भाजपा सरकार के खिलाफ

सीटू ने खोला दूसरा मोर्चा

- सभी राज्यों में, लगभग सभी जिलों में मजदूर एकजुटता कार्रवाई जारी है और संयुक्त किसान मोर्चा और एआईकेएससीसी के लगभग सभी आह्वानों का जवाब जमीनी स्तर से दिया जा रहा है;
- एआईकेएस द्वारा फंड के आह्वान को सीटू यूनियनों, फेडरेशनों और इसकी राज्य कमेटियों से व्यापक प्रतिक्रिया मिली है;
- सीटू केंद्र और आस–पास के राज्यों की सीटू राज्य कमेटियों द्वारा नेताओं और मजदूर वालंटियरों की बड़ी टुकड़ियों को नियमित रूप से दिल्ली/सिंघू, टिकरी, गाजीपुर, षाहजहाँपुर और पलवल आदि दिल्ली की सीमाओं पर भेजा जा रहा है;
- अन्य सीटू राज्य कमेटियां शाहजहांपुर और पलवल सीमाओं पर 2 दिनों के अंतराल पर प्रत्येक दल में 10 वालंटियरों का किसानों की लामबंदी में शामिल होने के लिए भेजेंगे;
- 15 जनवरी से सीटू राज्य स्तर के जत्थे किसानों की माँगों और एआईकेएस महापड़ाव कार्यक्रम पर भी प्रचार करेंगे;
- सीटू और मजदूर पूरी ताकत के साथ 23–25 जनवरी को एआईकेएस के आह्वान पर राज्य की राजधानियों में राज्यपालों के घरों के सामने 3 दिन के महापड़ाव में शामिल होंगे;
- इसके बाद 26 जनवरी 2021 को गणतंत्र दिवस पर किसान–मजदूर परेड होगी।

मोदी सरकार के खिलाफ, सीटू ने खोला दूसरा मोर्चा

30 दिसंबर – देशव्यापी विरोध

21–22 दिसंबर को सीटू की विस्तारित सचिवमंडल की बैठक के बाद कम समय के नोटिस के बावजूद, 10 सूत्री माँगों के अनुसरण में सीटू के मजदूरों के कार्य–स्थल/ब्लॉक–स्तर के विरोध के आह्वान पर देशव्यापी व्यापक प्रतिक्रिया मिली। राज्यों की कुछ शुरुआती रिपोर्टें निम्नलिखित हैं। अन्य रिपोर्टों की प्रतीक्षा है।

पश्चिम बंगाल

प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, राज्य के 11 जिलों के 67 ब्लॉकों में सीटू के 30 दिसंबर के विरोध कार्यक्रम को आयोजित किया गया था, जहाँ मजदूरों ने बढ़–चढ़ के कार्यक्रम में भाग लिया। अन्य जिलों में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया था लेकिन विस्तृत रिपोर्ट का इंतजार है। 4 जिलों ने अपरिहार्य स्थानीय परिस्थितियों में कार्यक्रम को पुनः आयोजित किया है।

कार्यक्रम को विभिन्न उद्योग फेडरेशनों द्वारा भी उनके प्रतिष्ठानों के सामने और ब्लॉक स्तरों पर आयोजित किया गया था।

केरल

विरोध कार्यक्रम राज्य के 14 जिलों के 218 केंद्रों पर हुआ है। राज्य में उसी दिन स्थानीय निकायों के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों के चुनाव के कारण, कार्यक्रम को वांछित स्तर पर आयोजित नहीं किया जा सका जैसा कि योजनाबद्ध था।

पंजाब

राज्य में सीटू जिला कमेटियों ने 18 जिलों में 35 स्थानों पर विरोध कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें लगभग 2,500 मजदूर षामिल हुए। हालांकि, तीन राज्य स्तरीय सीटू यूनियनें – लाल झंडा पी.बी., भाठा मजदूर यूनियन, आंगनवाड़ी मुलाजम यूनियन और लाल झंडा पेंडु चौकीदार यूनियन ने स्वतंत्र रूप से राज्य भर में 125 कार्य स्थलों पर कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें लगभग 9000 मजदूर शामिल हुए। यह इस तथ्य के बावजूद है कि आंगनवाड़ी, मनरेगा, निर्माण, ईंट भट्ठा और परिवहन कर्मचारी बड़ी संख्या में आंदोलनकारी किसानों के साथ दिल्ली की सीमाओं पर अपनी भागीदारी जारी रखे हुए हैं।

बिहार

पटना, समस्तीपुर, बेतिया, बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज, डेहरी में कुछ, छपरा और गया में विरोध प्रदर्शनों और धरनों का आयोजन सीटू कमेटियों और स्वतंत्र रूप से बीएसएसआर यूनियन और निर्माण, परिवहन, आंगनवाड़ी, बीजशिल्प मजदूर, रेलवे के अनुबंध कर्मी, सफाई कर्मी और अन्य यूनियनों द्वारा किया गया।

झारखंड

17 जिलों में लगभग 700 स्थानों पर मजदूरों द्वारा कोयला, इस्पात, परिवहन, निर्माण, बीड़ी और पत्थर खदान उद्योगों में कार्य स्थलों पर विरोध कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसके अलावा, आईसीडीएस में योजना कर्मी, मिड डे मील, आशा ने कार्य स्थलों पर विरोध प्रदर्शन किया।

चंडीगढ़

5 जिलों में 10 स्थानों पर, विरोध दिवस कार्यक्रम में 1053 मजदूरों ने भाग लिया।

दिल्ली-एनसीआर

गाजियाबाद में एटलस साइकिल, एमबीडी ग्रुप, एम गुलाब सिंह एंड संस, हैलिफैक्स इंटरनेशनल, एसएफसी सॉल्यूशन, ईसीआई, कोका कोला, आदि की फैक्ट्री के गेट्स के सामने विरोध कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

महाराष्ट्र

नासिक–धुले हाईवे पर रिलायंस पेट्रोल पंप महाराष्ट्र किसान सभा जत्थे के दिल्ली प्रस्थान के कारण बंद हो गया था।

विचार–विमर्श के बाद, संयुक्त प्लेटफॉर्म ट्रेड यूनियनों – कामगार संगठन संयुक्ता क्रुति कमेटी (महाराष्ट्र राज्य) ने अंबानी अडानी समूह के उत्पादों और सेवाओं का बहिष्कार करने का निर्णय लिया है जिसमें जियो, रिलायंस फ्रैश, रिलायंस पेट्रोल पंप, अडानी विलमार उपभोक्ता उत्पाद शामिल है जिसकी शुरुआत 1 जनवरी 2021 से होगी। बैज पहनने के कार्यक्रम के साथ–साथ, खुदरा दुकानों और पेट्रोल पंपों पर प्रदर्शन और पोस्टर अभियान का आयोजन किया जा रहा है।

उत्तराखंड

देहरादून में सीटू राजपुर कार्यालय के सामने प्रदर्शन और पीएम का पुतला दहन किया गया। इसके अलावा निर्माण मजदूरों ने निर्माणाधीन हाइड्रो–इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट के कार्य स्थल पर प्रदर्शन किया। आंगनवाड़ी कर्मचारी यूनियन ने सहसपुर और विकासनगर परियोजना स्थलों पर प्रदर्शन किया।

उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद में डीएलसी कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया गया।

तमिलनाडु

राज्य भर के 37 जिलों में 170 से अधिक केंद्रों पर प्रदर्शन हुए, जिनमें 11,500 से अधिक मजदूर शामिल हुए। लगभग 80,000 पत्रक बांटे गए और 3000 पोस्टर चिपकाए गए।

कोयला

सीटू के सीएमएसआई के आह्वान पर, 29–30 दिसंबर को 40 कोयला खदानों पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किये गये और प्रशासन को 10 सूत्री माँगें सौंपी गईं।

सीटू महंगाई भत्ते पर रोक (डीए फ्रीज) पर सरकार की निंदा करता है

सीटू ने मोदी सरकार की, सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों पर 1 अक्टूबर 2020 – 30 जून 2021 की अवधि के लिए अधिकारी और गैर–अधिकारी पर्यवेक्षकों पर, 19 नवंबर को अधिसूचना जारी कर उन पर डीए फ्रीज को थोपने पर निंदा करते हुए 21 नवंबर 2020 को बयान जारी किया। 'कोविड –19 से उत्पन्न संकट' का हवाला दे कर डीए फ्रीज को उचित ठहराया जा रहा है। साथ ही सरकार सीपीएसई से यहाँ तक कि आर्थिक रूप से सबसे अधिक तनावग्रस्त से, उन्हें विशेष–लाभांश, अपने स्वयं के शेयरों को खरीदने और कई अन्य माध्यमों से भुगतान करने के लिए मजबूर करके अधिकतम भी वसूल रही है।

डीए फ्रीज के इस तरह के अत्याचारपूर्ण ढांचे से पूरी तरह से लड़ा जाना चाहिए जैसा कि सरकार ने डीए फ्रीज की नीति को अपनाया, जिसके विस्तार से अन्य मजदूरों और कर्मचारियों की वैध कमाई को खारिज नहीं किया जा सकता है।

सीटू ने सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे वैध डीए की फ्रीजिंग और हड़पने के इस तरह के अत्याचारपूर्ण ढांचे का विरोध और खिलाफत करें।

सीटू सचिवमंडल की बैठक द्वारा पारित रिपोर्ट से

(21–22 दिसंबर, 2020)

- हम 26 नवंबर, 2020 की देशव्यापी आम हड़ताल की सफलता के लिए मजदूर वर्ग व सीटू की राज्य, जिला, और औद्योगिक सभी स्तरों की कमेटियों और निचले स्तर पर समन्वय कमेटियों को उनकी कड़ी मेहनत के लिए बधाई देते हैं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह हड़ताल, पहले की सभी हड़तालों से अलग, कोविड महामारी के दौरान बाधाओं और राज्यों के भीतर भी लामबंदी पर प्रतिबंध के बीच हुई थी। यह पूरी तरह से गतिविधियों के प्रारंभिक चरण से ही एक नया अनुभव है। हमारे कई नेता, सक्रिय कैडर खुद कोविड के शिकार हुए और उन्हें अपने घरों तक ही सीमित रहना पड़ा।
- हम केरल के मजदूर वर्ग और जनता को नगरपालिकाओं, निगमों और राज्य की सभी पंचायतों के चुनावों में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ और बीजेपी को हराने और (एलडीएफ) वाम लोकतांत्रिक मोर्चे की भारी जीत सुनिश्चित करने के लिए बधाई देते हैं। यह जीत इसलिए मायने रखती है क्योंकि कांग्रेस और भाजपा लंबे समय से राज्य में अनैतिक माहौल बनाने और वहाँ एलडीएफ को हटाने व उसकी छवि खराब करने का प्रयास कर रहे हैं।
- बिहार विधानसभा में वाम दलों की बढ़ती उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए हम बिहार की मेहनतकश जनता को भी बधाई देते हैं। विधानसभा चुनाव में 29 में से 16 सीटों पर जीत हासिल कर वाम दलों ने भी बिहार में महत्वपूर्ण बढ़त बनाई है।
- यह भी महत्त्वपूर्ण है कि बहुत कठिन परिस्थितियों में, वाम दलों ने कश्मीर क्षेत्र में जिला विकास परिषद् के हालिया चुनावों में लड़ी सभी पाँच सीटों पर जीत हासिल की है।
- महान अक्टूबर क्रांति की 103वीं वर्षगांठ, प्रथम राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन केंद्र की शताब्दी और सीटू की स्थापना की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में 7 नवंबर को सीटू केंद्र द्वारा एक अनूठी सार्वजनिक बैठक आयोजित की गई थी। इसका उपयोग हड़ताल के महत्व पर जोर देने के लिए भी किया गया। देश भर के मजदूरों को हमारा संदेश 7 भाषाओं – अंग्रेजी, हिंदी, मलयालम, बंगाली, तेलुगु, तमिल और कन्नड़ में राष्ट्रीय और संबंधित राज्य के नेतृत्व के माध्यम से पहुँचाया गया। कथित तौर पर जनसभा 81,703 लोगों तक पहुँची और 51,101 लोगों द्वारा देखी गई।
- हम ने पहले ही तय कर लिया है कि हमारी कार्रवाईयां – 1) अपने स्वयं के मंच से स्वतंत्र, 2) एआईकेएस और एआईडब्लयूयू के साथ संयुक्त, 3) संयुक्त ट्रेड यूनियन मंच के एक हिस्से के रुप में, तीन तरह से होंगी। हमें तीनों ही को पूरे जोश से जारी रखना होगा।
- हमें प्राथमिक मुद्दों के तौर पर रेलवे, बिजली और स्वास्थय के निजीकरण के खिलाफ अभियान चलाना होगा। हमारी सभी फेडरेशनों और राज्य कमेटियों को संबद्ध सैक्टर/राज्य में मजदूरों के विशिष्ट ज्वलंत मुद्दों और उन्हें भाजपा सरकार की नीतियों और उसकी पूँजीपति वर्ग की पक्षधर राजनीति से जोड़ते हुए बड़े पैमाने पर अभियान और संघर्ष की योजना बनानी होगी।
- सीटू से संबधित यूनियनों की गाँव/ब्लॉक/मुहल्ला स्तर पर समन्वय कमेटियों का गठन करना होगा।
- मेहनतकश जनता के सभी तबकों, मजदूरों और किसानों के बीच व्यापक स्वतःस्फूर्त संघर्ष में झलकता क्रोध कुख्यात पूँजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने के उद्देश्य वाली संदिग्ध राजनीति का पर्दाफाश करने का अवसर प्रदान करता है। इस तरह के पर्दाफाश से हमें संघर्ष को अवज्ञा और प्रतिरोध के स्तर तक ले जाने और मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता के पक्ष में ताकतों के सहसंबंधो को बदलने में मदद मिलेगी। कोविड महामारी और लॉकडाउन की अवधि के दौरान हमारी बहुपक्षीय गतिविधियाँ – प्रवासी मजदूरों को राहत प्रदान करने से लेकर, उन्हें उनके अधिकारों के संघर्ष में अग्रणी, 26 नवंबर को महामारी के दौरान अभूतपूर्व हड़ताल और किसानों के संघर्षों में एकजुटता, 8 दिसंबर भारत बंद में हमारी भूमिका सहित – स्पष्ट रूप से साबित करती हैं कि हम ऐसा कर सकते है।

चल रहे किसान आंदोलन के समर्थन में ट्रेड यूनियनों की एकजुटता की कार्रवाईयां

एकजुटता की भावी कार्रवाई का आह्वान

किसान संघर्श के समर्थन में 8 दिसंबर को सफल भारत बंद के बाद, 11 दिसंबर को एक संयुक्त बयान में सीटीयूओं (केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और स्वतंत्र क्षेत्रीय फेडरेशनों/एसोसिएशन का संयुक्त मंच) ने किसानों के चल रहे एकजुट संघर्शों के लिए अपना पूरा समर्थन दोहराया और क्रूर कृषि कानूनों, बिजली (संशोधन) विधेयक 2020 को निरस्त करने और एमएसपी की गारंटी देने वाले कानून की माँग की।

सीटू को संयुक्त किसान मोर्चा से पत्र मिला, जिसमें उन्होंने अपने संघर्ष में केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों से निरंतर समर्थन की सराहना की और आंदोलन के अगले चरण के बारे में जानकारी दी और समर्थन का अनुरोध किया। केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों ने मजदूरों, कर्मचारियों और उनकी यूनियनों से, संबद्धताओं के परे, सतर्क रहने और आने वाले महत्वपूर्ण समय में किसानों के संयुक्त संघर्ष के आह्वान को अपने सक्रिय एकजुटता का विस्तार करने का आह्वान किया, जिसमें 12 दिसंबर से दिल्ली–जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग को अवरुद्ध करने – 12 दिसंबर से पूरे देश में टोल प्लाजा खोलने के लिए – 14 दिसंबर 2020 को किसानों की राज्य/स्थानीय स्तर की कार्रवाई; और – अंबानी और अडानी के उत्पादों का बहिष्कार करना जैसे जियो, अडानी फ्रैश, रिलायंस मॉल आदि शामिल हैं।

किसान संघर्ष निधि में मजदूर वर्ग का योगदान

¼tkjh fdlku l?k"kZ esa QaM dks lg;kx dks fy, lhVw dk vf[ky Hkkjrh; vkºoku ij etnnjkS] ;fu;ukS] QaMjs'kukS vkSj lhVw defV;kas dh lgt vkSj mRlkgh çfrfØ;k feyh gSA etnnj ;kxnku ds :i esa igys ls gh ,vkbZds,l [kkrs esa i;kZIr ek=k esa tek fd;k tk pqdk gSA fooj.k ,d= fd;k tk jgk gSA lhVw jkT; defV;ksa vkSj QaMjs'kuksa dh dqN fjiksVZ fuEu Ádkj ls gSA½

सीटू की आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी

16 दिसंबर को देश भर में किसानों के संघर्श के साथ एकजुटता में राज्य में मजदूरों और यूनियनों से एकत्र राशि के रूप में एआईकेएस खाते में 10,69,000 रुपये डाले गए।

सीटू की केरल राज्य कमेटी

सीटू की केरल राज्य कमेटी ने 1 जनवरी 2021 को एआईकेएस खाते में कुल 8,39,495 रुपये की राशि चल रहे किसान संघर्ष के लिए मजदूरों के सहयोग के रुप में भेजी है।

बीएसएनएल कर्मचारी यूनियन

बीएसएनएल कर्मचारी यूनियन के 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 29 दिसंबर 2020 को दिल्ली के सिंघू सीमा पर आंदोलनकारी किसानों से मुलाकात की और किसान संघर्ष के साथ दूरसंचार कर्मचारियों की एकजुटता व्यक्त की। आयोजन स्थल पर, उन्होंने किसान संघर्ष निधि में योगदान के रूप में एआईकेएस के वित्त सचिव कृष्णप्रसाद को 1 लाख रुपये का चेक भी सौंपा।

ऑल इण्डिया कोल वर्कर्स फेडरेशन

चल रहे किसान आंदोलन में कोयला श्रमिकों के योगदान के रूप में 50,000 रुपये का चेक भेजकर, ऑल इंडिया कोल वर्कर्स फेडरेषन के महासचिव और सीटू के राष्ट्रीय सचिव डीडी रामानंदन ने अपने पत्र में एआईकेएस के

महासचिव हन्नान मोल्लाह को सूचित किया कि कोयला मजदूरों ने देश भर के सभी कोयला असर क्षेत्रों में किसान आंदोलन के साथ एकजुटता कार्रवाईयों का प्रण लिया है।

इलैक्ट्रीसिटी एम्पलाईज फेडरेशन ऑफ इण्डिया (ईफी)

ईफी कार्यकारी अध्यक्ष और सीटू के राष्ट्रीय सचिव स्वदेश देव रॉय के नेतृत्व में सुभाश लाम्बा, के. जयप्रकाश, एल.आर. श्रीकुमार, आर. करुमलैयन, सुरेश राठी और नरेश कुमार के तौर पर राष्ट्रीय एवं राज्य नेतृत्व के 7–सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 16 दिसंबर को सिंघु बॉडर पर आन्दोलनकारी किसान नेताओं से मिले।

ईफी ने एआईकेएस को किसान के जारी राष्ट्रीय संघर्ष में बिजली कर्मचारियों की ओर से सहयोग के रुप में 6 लाख रुपये का योगदान दिया है।

नॉर्थ जोन इन्श्योरेन्स एम्पलाईज एसोसिएशन (एन.जैड.आई.ई.ए.)

एन.जैड.आई.ई.ए. के आह्वान पर, करनाल और रोहतक मंडल की कमेटियों के सचिव हरीश नागपाल और पवन मलिक ने 5 दिसंबर को एआईकेएस हरियाणा राज्य सचिव सुमित को रोहतक में चल रहे किसान संघर्ष में बीमा कर्मचारियों के योगदान के रुप में 1 लाख रुपये का चेक सौंपा और कृषि अधिनियमों और विद्युत विधेयक 2020 के खिलाफ संघर्षरत किसानों के साथ पूर्ण एकजुटता व्यक्त की। इस अवसर पर एआईकेएस के राज्य उपाध्यक्ष प्रीत सिंह और सीटू के सुरेंद्र मलिक भी उपस्थित थे।

4 दिसंबर को, एन.जैड.आई.ई.ए. की सभी इकाइयों ने किसानों की माँगों के समर्थन में और मोदी सरकार के अलोकतांत्रिक उपायों के खिलाफ दोपहर के भोजन के समय प्रदर्षन किया।

सर्व कर्मचारी संघ, हरियाणा

सर्व कर्मचारी संघ, हरियाणा ने हरियाणा में एआईकेएस नेताओं को राज्य सरकार और अर्ध–सरकारी कर्मचारियों की ओर से किसान संघर्ष में योगदान के रुप में 3 लाख रुपये का भुगतान किया।

ऑल हरियाणा पावर कॉरपोरेशन वर्कर यूनियन

ऑल हरियाणा पॉवर कॉरपोरेषन वर्कर यूनियन ने हरियाणा के एआईकेएस नेताओं को दिल्ली और देष में चल रहे किसान आंदोलन में राज्य बिजली कर्मचारियों के योगदान के रुप में 1 लाख रुपये का भुगतान किया है।

पंजाब के मनरेगा मजदूर

सीटू की मनरेगा मजदूर यूनियन पंजाब के महासचिव के नेतृत्व में, यूनियन ने दिल्ली सीमा पर लड़ रहे किसानों की मदद के लिए 2,20,300 रुपये और 10 क्विंटल 70 किलोग्राम गेहूं का आटा, 40 किलोग्राम सूखा दूध और 50 किलो प्याज इकट्ठा किया है।

राज्यों से

पश्चिम बंगाल

टीएमसी सरकार के विश्वासघात के खिलाफ पैरा टीचर्स का विरोध प्रदर्शन

18 दिसम्बर की रैली

30 दिसम्बर को कालेज स्ट्रीट पर नाकाबन्दी

टीएमसी सरकार द्वारा उन्हें दिए गए आश्वासन को लागू नहीं करने के धोखे के खिलाफ विरोध; पश्चिम बंगाल के पैरा टीचर्स (अनुबंध शिक्षकों) ने 11 नवंबर को 3,000 प्रदर्शनों का आयोजन करके आंदोलन शुरू किया और राज्य सरकार के शिक्षा विभाग के कार्यालय, *विकास भवन* के पास 18 दिसंबर 2020 से अनिश्चितकालीन दिन–रात धरना प्रदर्शन शुरू किया।

11 नवंबर, 2019 को राज्य के पैरा टीचर्स ने अपने अनिश्चितकालीन 32 दिनों के कार्य बहिष्कार और राज्य स्तर पर 28 दिनों की अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल के साथ धरना प्रदर्शन शुरू किया, जो राज्य के शिक्षा मंत्री द्वारा उनके नेताओं को बैठक में, डेढ़ महीने के भीतर सभी नौकरी से संबंधित मुद्दों को हल करेंगे जिसमें राज्य भर के सभी स्कूलों में प्राथमिक शिक्षक के रूप में नौकरियों में नियमितीकरण की उनकी मुख्य माँग शामिल है, स्पश्ट आष्वासन देने के बाद समाप्त हुई।

कोविड –19 महामारी और इससे जुड़े गंभीर प्रतिबंध प्रारंभिक चरण ने पैरा टीचर्स को संघर्ष शुरू करने से रोका। टीएमसी सरकार ने, पूर्व अनुमतियों के बावजूद, 11 नवंबर, 2020 की रैली को रोककर पैरा टीचर्स को आंदोलन शुरू करने से रोकने की पूरी कोशिश की, और सभी नेताओं और 19 अन्य शिक्षकों को गिरफ्तार किया और देर तक हिरासत में रखने के बाद देर शाम जमानत पर रिहा किया गया।

पैरा टीचर्स और एक मानवाधिकार संस्था के संयुक्त मंच ने कोलकाता उच्च न्यायालय में शांतिपूर्ण आंदोलन की अनुमति के लिए प्रार्थना करते हुए याचिका दायर की। जाने–माने वकील बिकाश रंजन भट्टाचार्य, माकपा सांसद ने उनके मामले पर बहस की और उच्च न्यायालय ने पैरा टीचर्स को अपना धरना प्रदर्शन तब तक जारी रखने की अनुमति दे दी जब तक सरकार उनकी माँगों को पूरा नहीं करती। रैली आयोजित करने के लिए देर रात में अनुमति भी दी गई और 18 दिसंबर को अगली सुबह रैली आयोजित करने के लिए, 3,000 से अधिक पैरा टीचर्स इसमें शामिल हुए।

इसके अलावा, पैरा टीचर्स 28 दिसंबर को शिक्षकों और विभिन्न योजनाओं के तहत काम करने वाले गैर–शिक्षण कर्मचारियों के एकजुट संयुक्त जन आंदोलन में शामिल होंगे और एनईपी, श्रम संहिता और खेत अधिनियमों के विरोध में 7 जनवरी को गिरफ्तायिां देंगे।

30 दिसंबर को, पश्चिम बंगाल के लगभग 5,000 पैरा टीचर्स ने कोलकाता शहर के एक मुख्य केंद्र कॉलेज स्ट्रीट को ब्लॉक कर दिया।

आंध्र प्रदेश

केपीसीएल पोर्ट वर्कर्स का संघर्ष और जीत

आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में कृष्णपट्टनम पोर्ट कंपनी लिमिटेड (केपीसीएल) के कृष्णापटनम प्रमुख बंदरगाह के 500 प्रशासनिक कर्मचारियों को छोड़कर, सीटू से जुड़े कृष्णापटनम पोर्ट क्लियरिंग एंड फॉरवर्डिंग वर्कर्स यूनियन के तहत सभी 12,000 कर्मचारी, तीन पालियों, परिचालन बर्थ और लॉजिस्टिक्स – 26 नवंबर 2020 को, मजदूरों की देशव्यापी आम हड़ताल के दिन 24 घंटे की कुल हड़ताल पर थे। यह पोर्ट के निर्माण के बाद से 13 वर्षों में पहली हड़ताल थी। 2 अक्टूबर 2020 को केपीसीएल को अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड (एपीएसईज़ेड) ने सीवीआर ग्रुप से केपीसीएल में 75 प्रतिशत हिस्सेदारी का अधिग्रहण पूरा कर लिया था। तब से मजदूरों ने अपना संघर्ष तेज कर दिया।

यह हड़ताल मजदूरों की, न्यूनतम मजदूरी, बोनस, अवकाश वेतन, 12 घंटे काम करने के खिलाफ, ओवरटाइम मजदूरी, पीएफ इत्यादि के भुगतान के लिए लंबे समय से लंबित वैध माँगों का परिणाम थी।

हड़ताल के बाद नेल्लोर कलेक्ट्रेट के सामने अनिश्चितकालीन धरना दिया गया; 10 दिसंबर *कर्मिका घर्जना* रैली; 11 दिसंबर से वोल्वो वाहन चालकों द्वारा 12 घंटे काम करने से इनकार और प्रतिरोध; 22–23 दिसंबर को केपीसीएल पोर्ट पर 48 घंटे का धरना, जिसमें सीटू के जल परिवहन मजदूर फेडरेशन के महासचिव नरेंद्र राव और सीटू के आंध्र प्रदेश अध्यक्ष च. नरसिंह राव ने भाग लिया और संबोधित किया।

अंततः प्रधान श्रम सचिव द्वारा भाग ली गई त्रिपक्षीय बैठक में 31 दिसंबर को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। यह मजदूरों की विशेष रूप से अडानी समूह की कंपनी में जीत है।

समझौता ज्ञापन के प्रमुख बिंदु

1. 12 घंटे की कार्य प्रणाली को तत्काल प्रभाव से 8 घंटे के काम में बदल दिया गया;
2. सभी अनुबंध कर्मचारियों को 2019–20 वित्त वर्श के बोनस का भुगतान 30–01–2021 से पहले किया जाएगा;
3. नए सेवा प्रदाताओं के तहत पुराने ठेकेदारों के साथ केपीसीएल के सभी कर्मचारी सेवा की निरंतरता के साथ काम में शामिल होंगे।
4. सभी कर्मचारी पिछले प्रबंधन के तहत लंबित लाभों का दावा करेंगे;
5. प्रधान नियोक्ता के रूप में ठेकेदारों द्वारा विफलता के मामले में मजदूरों के सभी वैधानिक लाभों की प्राथमिक जिम्मेदारी केपीसीएल की होगी;
6. डीएलसी, नेल्लोर उन 26 मजदूरों के बारे मे छानबीन करेगा और रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा, जो अपने मूल स्थानों पर गए और प्रबंधन द्वारा उन्हें सेवा में वापस लेने से इनकार कर दिया गया; कामगारों की आकस्मिक मृत्यु के मुआवजे का भुगतान नहीं होने के मामले में;
7. प्रधान श्रम सचिव ने केपीसीएल प्रबंधन को निर्देश दिया कि वह केपीसीएल में एकमात्र क्रियाशील यूनियन, सीटू यूनियन को मान्यता दे;
8. मजदूरों का कोई उत्पीड़न नहीं।

अंतरष्ट्रीय

दुनिया में मजदूरों की आम हड़तालों की लहर

अक्टूबर–दिसंबर, 2020 के दौरान, विश्व पूँजीवाद के तहत कई देशों – इंडोनेशिया, भारत, यूनान, इटली, दक्षिण कोरिया और फ्रांस में मजदूरों की आम हड़तालों की लहर दिखाई पड़ी। इसके अलावा कई अन्य देशों में विभिन्न सैक्टरों में संघर्ष हुए।

ये हड़ताले और संघर्ष कोविड –19 महामारी द्वारा पैदा की गई असामान्य परिस्थिति में हो रहे हैं। हड़तालों के मुद्दे कमोबेश एक जैसे हैं। इन देशों की सरकारें कारपोरेटों के मुनाफों को बढ़ाने के लिए मजदूरों के शोषण को बढ़ाकर, उनकी आजीविका पर हमला कर तथा मजदूरों व जनता के अधिकारों और आंदोलनों पर पाबंदियां लगाकर अभूतपूर्व हमले करते आ रही हैं।

इंडोनेशिया के मजदूर को 'जॉब क्रिएशन लॉ' (नौकरी सृजन कानून) के खिलाफ 6–8 अक्टूबर, 2020 में 3 दिन तक आम हड़ताल पर थे। 26 नवंबर, 2020 को भारत और यूनान के मजदूर लगभग एक जैसी माँगों को लेकर आम हड़ताल पर थे। एक दिन पहले, 25 नवंबर को, इटली के मजदूर सरकार के मजदूर विरोधी व कारपोरेटों के पक्षधर कानूनों व कदमों के खिलाफ तथा दक्षिण कोरिया में मजदूरों के हड़ताल व आंदोलन करने पर पाबंदी लगाने के सरकार के कदम के खिलाफ हड़जाल पर थे। फ्रांस के मजदूर वहाँ की मैक्रोन सरकार की एक पेंशन योजना के विरोध में 5 दिसंबर को हड़ताल पर थे।

इन सभी हड़तालों के साथ कोविड –19 महामारी का सीधा प्रभाव था क्योंकि इन देशों की सरकारें स्वास्थ्य के आधारभूत ढ़ांचे व सुरक्षा उपायों की अनुपस्थिति में मजदूरों व जनता की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को नजरअंदाज कर रही है; और कोविड –19 महामारी का लाभ उठाते हुए, मजदूर विरोधी कानून व कदमों को थोपने तथा हड़तालों व आंदोलनों पर पाबंदियां लगाने की कोशिशें कर रही है।

(सीटू के केन्द्रीय बुलेटिन तथा सीटू मजदूर.....पुनः प्रकाशित तथा संपादित)

इंडोनेशिया

तथाकथित सर्वग्राही 'जॉब क्रिएशन लॉ' को इंडोनेशिया की संसद द्वारा, मजदूरों की घोषित 6–8 अक्टूबर की आम हड़ताल से ठीक पहले, 5 अक्टूबर, 2020 को जल्दबाजी में मंजूरी किया था। इसने सैक्टोरल न्यूनतम वेतन को खत्म कर दिया; सीवरेन्स पे को 32 महीने से घटाकर 19 महीने कर दिया; ओवरटाइम को बढ़ाकर प्रतिदिन 4 घंटे और सप्ताह में 18 घंटे तक कर दिया; दो साप्ताहिक छुट्टी वाले दिनों को एक कर दिया; देश के बाहर से मजदूरों को काम पर रखने के साथ ही आउटसोर्सिंग पर पाबंदी को कम कर दिया। इस कानून को उन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आमंत्रित करने की गरज से लाया गया जिनके जल्द ही चीन छोड़कर आने की उम्मीद की गई। इंडोनेशिया के चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ने इसका स्वागत किया है।

इंडोनेशिया के सुरक्षा मंत्री ने सेना मुखिया तथा अन्य शीर्ष नेताओं के साथ विरोध करने वालों को धमकाया तथा राष्ट्रीय कोविड –19 कार्य बल के प्रवक्ता ने कहा 'सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल की स्थिति है।'

ट्रेड यूनियनों के संयुक्त मंच के आह्वान पर, हजारों मजदूरों ने 6–8 अक्टूबर की 3 दिन की हड़ताल की और हजारों ने शहरों और औद्योगिक केंद्रों में प्रदर्शन किये। कन्फेडरेशन ऑफ इंडोनेशियाई ट्रेड यूनियन्स ने कहा कि 32 लेबर यूनियनों और फेडरेशनों का प्रतिनिधित्व करने वाले 20 लाख से मजदूरों ने 6 अक्टूबर से शुरू हुई हड़ताल और रैलियों में कई दिनों तक भाग लिया।

जकार्ता में पुलिस ने संसद की ओर जाने वाली सड़कों को बंद कर मजदूरों को वंहा बड़ी रैली करने से रोक दिया; तथा परिसर में पहुंचने की कोशिश करने वाले कम से कम 200 हाई स्कूल के छात्रों को गिरफ्त में लिया। देश भर में बहुत सारे मजदूरों और छात्रों को गिरफ्तार किया गया। ट्रेड यूनियनों व छात्रों समेत 15 कार्यकर्ता समूहों ने आंदोलन का नेतृत्व किया।

यूनान में मजदूरों की आम हड़ताल

26 नवंबर 2020 को, यूनान के मजदूर देशव्यापी आम हड़ताल पर थे। इसका आह्वान ऑल वर्कर्स मिलिटेंट फ्रंट (पी.ए.एम.ई.), सिविल सर्वेंट कन्फेडरेशन, फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ हॉस्पिटल डॉक्टर्स, कम्युनिस्ट यूथ ऑफ ग्रीस (के.एन.ई.) और समूचे देश भर में सैकड़ों कार्यस्थलों की बेस यूनियनों ने किया था। यह हड़ताल मुख्य तौर पर दक्षिणपंथी सरकार के 8 घंटे के कार्य दिवस की व्यवस्था को समाप्त करने तथा हड़ताल के अधिकार पर नई पाबंदी लगाने के कदम के विरोध में थी। हड़ताल मजदूरों के जीवन, स्वास्थ्य व अधिकारों की सुरक्षा के लिए थी। हड़ताल की माँगों में सभी बेरोजगारों के लिए बिना शर्त लाभ की माँग; तथा रोजगार अधिकारों में कटौती न किये जाने की माँग शामिल थी।

पूरे यूनान में सार्वजनिक परिवहन, सार्वजनिक अस्पतालों, शैक्षिक संस्थानों और विरोध प्रदर्षनों में लगभग पूरी भागीदारी के साथ बड़े कार्यस्थलों और कारखानों में 24 घंटे की हड़ताल रही। हड़ताल ने देश भर में रेल, मेट्रो और ट्राम सेवाओं और द्वीपों के लिए नौका सेवाओं सहित सभी सार्वजनिक परिवहन को पंगु बना दिया। कोरोना वायरस के खिलाफ बेहतर कार्यस्थल सुरक्षा की माँग करते हुए सिविल सर्वेंट हड़ताल में शामिल हुए। यूनानी पत्रकारों ने दो घंटे के काम के ठहराव के साथ हड़ताल में भाग लिया, जिसके दौरान कोई भी समाचार प्रसारण प्रसारित नहीं किया गया। हवाई यातायात नियंत्रकों ने उनकी भागीदारी को एक अदालत द्वारा अवैध करार दिए जाने के बाद हड़ताल को रद्द या फिर पुनःआयोजित कर दिया।

सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने एथेंस के क्लाफथोनोस स्क्वायर तक मार्च किया। देश भर में इसी तरह के प्रदर्शन हुए। सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए एथेंस के सिटी सेंटर और अन्य बड़े शहरों में भारी संख्या में दंगा पुलिस, बख्तरबंद वाहनों और पुलिस को तैनात कर दिया। पुलिस ने सात ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया और दर्जनों मजदूरों और यूनियन पदाधिकारियों पर हड़ताल और प्रदर्शनों में भाग लेने के कारण सैकड़ों यूरो का जुर्माना लगाया।

इटली में मजदूरों की आम हड़ताल

सार्वजनिक मजदूरों की प्रतिनिधि केंद्रीय ट्रेड यूनियन यूएसआई के आह्वान पर 25 नवंबर को इटली में सार्वजनिक क्षेत्र के मजदूरों की राष्ट्रीय आम हड़ताल ने परिवहन, स्कूलों और स्वास्थ्य सेवाओं के सभी साधनों को पंगु बना दिया। घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें गंभीर रूप से प्रभावित हुईं क्योंकि वायु नियंत्रक हड़ताल पर थे। यह हड़ताल मुख्य रूप से सरकार द्वारा निजीकरण के प्रयास के विरोध, कोविड –19 महामारी के दौरान कार्यस्थलों पर मजदूरों की सुरक्षा और अधिकारों की रक्षा में थी।

कोविड महामारी के दौरान निजी क्षेत्र के मजदूर, विषेश रूप से छोटे पैमाने के सैक्टर में, नौकरियों का गंभीर नुक्सान और वेतन कटौती का सामना कर रहे हैं।

दक्षिण कोरिया में मजदूरों की आम हड़ताल

25 नवंबर को दक्षिण कोरिया में मजदूरों की देशव्यापी आम हड़ताल में लगभग 2 लाख मजदूरों ने भाग लिया। कोरियन कन्फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन (केसीटीयू) द्वारा यह हड़ताल श्रम कानूनों में प्रस्तावित संशोधन के विरो

ा में आयोजित की गई थी, जो मजदूरों को हड़ताल के दौरान एक परियोजनास्थल को घेरने पर रोक लगाएगा। हड़तालियों ने देश भर में प्रदर्शन किए। किआ मोटर्स के 30,000 कर्मचारी भी नौकरियों में कटौती के खिलाफ और वेतन बढ़ोतरी के लिए हड़ताल पर थे। प्रधान मंत्री ने केआईटीयू को कोविड –19 प्रसार और छात्रों की परीक्षाओं का हवाला देते हंए हड़ताल और रैलियों को रद्द करने को कहा; और केंद्रीय आपदा प्रबंधन की बैठक आयोजित की; और पुलिस और स्थानीय सरकारों से कोविड प्रतिबंधों को सुनिश्चित करने का आह्वान किया।

फ्रांस में मजदूरों की आम हड़ताल

परिवहन, डाक, शिक्षा क्षेत्रों सहित सीजीटी की सार्वजनिक सेवा ट्रेड यूनियनों ने 5 दिसंबर को सार्वजनिक क्षेत्र के मजदूरों की देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया और सरकार के 'पेंशन सुधारों' का विरोध करने के लिए हड़तालों की 'लहर' के लिए जमीन तैयार करने के लिए की है। फ्रांस ने दशकों में सबसे बड़ी हड़तालों में से एक का अनुभव किया जैसा कि सार्वजनिक क्षेत्र के मजदूर, राष्ट्रपति मैक्रोन के प्रस्तावित 'पेंशन सुधारों' जिसमें मौजूदा सेक्टरवाइज 44 विभिन्न पेंषन योजनाओं की जगह एकल राष्ट्रीय पेंशन योजना है, के खिलाफ विरोध कर रहे हैं।

इस हड़ताल ने रेल, मेट्रो, सड़क, वायु और जलमार्ग सहित पूरे परिवहन तंत्र को पंगु बना दिया। ला पोस्टे (डाक विभाग) कई हफ्तों की हड़तालों से प्रभावित है। सीजीटी ने बताया कि 'कामकाजी परिस्थितियों और सार्वजनिक सेवा की सुरक्षा' आपस में जुड़े हुए हैं।

फ्रांसीसी राष्ट्रीय रेल कंपनी, एसएनसीएफ ने अपनी 90 प्रतिशत ट्रेनें रद्द कर दीं; और पेरिस में मेट्रो ने 11 लाइनों को बंद कर दिया। फ्रांस का शिक्षण स्टाफ देशव्यापी हड़ताल पर था। उनकी यूनियन, उन्सा–एडुकेशन, ने कहा कि पेंशन सुधार शिक्षकों को दंडित करने के लिए हैं। पेरिस के दो सबसे बड़े स्थलों आईफिल टॉवर और ऑर्से संग्रहालय ने भी कर्मचारियों की कमी की सूचना दी थी। सीजीटी के नेता फिलिप मार्टिनेज ने संवाददाताओं से कहा कि हड़ताल 5 दिसंबर शाम को समाप्त नहीं होगी।

फ्रांसीसी अखबार, ली मोंडे, ने बताया कि 5 दिसंबर को फ्रांस के 30 अलग अलग हिस्सों में सड़क प्रदर्शनों में 1.80 लाख से अधिक हड़ताली मजदूर शामिल हुए।

पंचायत में निर्वाचित हुए मनरेगा वर्कर्स

केरल ने फिर रचा इतिहास

नव निर्वाचित कुल 15,961 पंचायत सदस्यों में से (50 प्रतिशत महिलाओं के लिए आरक्षित), 2007 मनरेगा मजदूर हैं; और कुल 2000 से अधिक ब्लॉक पंचायत सदस्य में से 147 मनरेगा मजदूर हैं, जिनमें से 140 महिलाएं हैं। इनमें से ज्यादातर एलडीएफ उम्मीदवार थे। चुने गए सदस्यों में से 10 केरल में एमआरईजीपी लेबर यूनियन के पदाधिकारी हैं।

पहली बार, भारत के किसी भी राज्य में इतनी बड़ी संख्या में चुने हुए जनप्रतिनिधि मनरेगा मजदूर हैं जो पूरे पूँजीवादी विश्व में एक मिसाल कायम कर रहे हैं। उन्होंने दो मायने में, उदाहरण दिए हैं – एक, कि वे असंगठित क्षेत्र में मजदूरों के निम्न पायदान पर हैं और दो, कि पितृसत्तात्मक समाज में उनमें से बड़ी संख्या में महिलाएं हैं। यह जमीनी स्तर से चुने हुए प्रतिनिधियों के साथ जमीनी स्तर का लोकतंत्र है।

vkS|ksfxd Jfedksa ds fy, miHkksDrk ewY; lwpdkad vk/kkj o"kZ 2001=100

नं. 112/6/2006–एनसीपीआई

jkT;	dsUnz	ebZ 2020	twu 2020
vkU/kz çns'k	xqa.Vwj	123.0	121.3
	uSYyksj	115.3	116.0
	fo'kk[kkiŸkue	128.9	129.8
vle	fc'oukFk pkjkyh	128.1	130.9
	MqeMqek frulqf[k;k	134.9	137.8
	xqokgkVh	129.1	128.8
	ycd flYpj	119.1	121.1
	uqekyhx< xksyk?kkV	118.7	119.7
	f'kolkxj	121.1	121.7
fcgkj	eaqxsj&tekyiqj	120.2	120.8
	iVuk	122.5	121.8
p.Mhx<	p.Mhx<	123.2	123.7
NŸkhlx<	fHkykbZ	113.8	112.3
	dksjck	121.9	121.3
	jk;iqj	115.9	115.0
fnYyh	fnYyh	115.6	116.6
Xkksvk	xksvk	113.2	113.8
Xkqtjkr	vgenkckn	111.5	111.9
	Hkkouxj	117.8	118.1
	jktdksV	114.0	114.0
	lwjr	118.2	116.1
	oMksnjk	115.9	114.7
gfj;k.kk	Qjhnkckn	118.2	118.6
		118.6	119.0
	x#xzke	122.0	121.9
	;equk uxj	115.6	1l5.6
fgekpy	fgekpy çns'k	122.1	122.5
tEew ,oa d'ehj	Jhuxj	122.3	122.6
>kj[k.M	ckdkjks	119.9	120.0
	/kuckn&>fj;k	122.7	123.7
	te'knsniqj	130.9	132.2
	jkex<	129.1	129.4
dukZVd	csyxke	118.3	119.9
	csaxy#	115.5	115.5*
	fpdeaxy#	112.9	111.8
	nkoaxsjs	122.1	122.8
	gqcyh /kkjokM+	115.5	117.9
	ejdjk&dksMkxw	108.7	109.9
	eSlwj	114.9	113.8
dsjy	,.kkZdqye@vyqobZ	122.6	124.2
	bMqDdh	122.8	122.8
	fDoyksu	119.4	118.8
e/; çns'k	Hkksiky	115.4	115.0
	fNanokMk	117.1	117.7
	bankSj	115.3	115.8
	tcyiqj	116.3	117.3

jkT;	dsUnz	ebZ 2020	twu 2020
egkjk"Vª	eqEcbZ	114.8	114.0
	ukxiqj	118.4	118.2
	ukfld	114.9	116.1
	iq.ks	115.3	115.8
	'kksykiqj	116.6	117.0
	Fkkus	113.3	13.4
es?kky;	f'kykWax	126.6	126.3
mMhlk	vaxqy&rkypsj	127.6	128.3
	dVd	126.9	126.6
	D;ksa>j	125.8	124.9
iqnqpsjh	iqnqpsjh	117.6	122.2
iatkc	ve`rlj	124.3	123.8
	tkyU/kj	124.3	123.9
	yqf/k;kuk	121.4	121.7
	lax#j	116.2	117.0
jktLFkku	vyoj	117.9	118.9
	Hkhyokm+k	116.5	116.3
	t;iqj	115.0	114.2
rfeyukMq	pUuSa	119.5	122.6
	dks;EcVwj	119.3	119.1
	dqUuwj	122.2	122.2
		119.2	118.0
	enqjkbZ	116.7	118.9
	lsye	123.1	124.5
	fr#usyosyh	120.7	121.2
rsyaxkuk	fo#/kquxj	120.4	119.7
	gSnjkckn	129.4	127.7
	epsfj;y	121.1	120.9
f=iqjk	f=iqjk	120.1	122.1
mŸkj çns'k	vkxjk	119.8	119.4
	xkft;kckn@tSlh uxj	121.8	121.9
	dkuiqj	120.3	120.9
	y[kuÅ	126.4	124.6
	okjk.klh	122.7	124.4
mÙkjk[kaM	m/kefla g uxj	129.6	127.6
if'pe caxky	nkftZfyax	114.9	115.6
	nqxkZiqj	117.6	119.9
	gfYn;k	116.3	115.7
	gkoMk	122.5	123.1
	tyikbZxqMh	126.2	125.3
	dksydkrk	128.3	129.1
	jkuhxat	128.0	129.9
vf[ky Hkkjrh; lwpdkad		**119.5**	**119.9**

सीटू का मुखपत्र

सीटू मजदूर

ग्राहक बनें

- व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए – वार्षिक ग्राहक शुल्क – रू0 100/–
- एजेंसी – कम से कम पाँच प्रतियों; 25% छूट कमीशन के रूप में;
- भुगतान – चेक द्वारा – ''सीटू मजदूर'' जो कैनरा बैंक, डीडीयू मार्ग शाखा, नई दिल्ली–110002 पर देय

बैंक मनी ट्रांसफर द्वारा – एसबीए/सीन0 0158101019568;
आईएफएससी कोड : सीएनआरबी 0000158;
ई मेल/पत्र की सूचना के साथ

- संपर्क: प्रबंधक, सीटू मजदूर, सीटू केन्द्र, बी टी आर भवन, 13 ए राऊज एवेन्यू, नई दिल्ली–110002; फोनः (011) 23221306 फैक्सः (011) 23221284